प्रश्न : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में भू–राजनीतिक दृष्टिकोण की व्याख्या करें।

Explain the Geo-Political Approach to the study of International Relations.

उत्तर : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, विशेषतया विदेश नीति के अध्ययन के लिए एक बहुत महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण भू–राजनीतिक दृष्टिकोण रहा है। यह दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धिों की व्याख्या और भविष्यबाणी करने के अभ्यास को भौगोलिक तत्त्वों, विशेषतया स्थिति, आकार, जलवायु, भू–तल की रचना, प्राकृतिक स्रोतों और जनसंख्या के तत्त्वों आदि के आधार पर करता है। भू–राजनीतिक दृष्टिकोण यह विचार प्रस्तुत करता है कि राजनीतिक पहचान और क्रिया बहुत सीमा तक भूगोल द्वारा अधिक या कम रूप में निर्धारित होती है।

आरम्भ में भू–राजनीतिक दृष्टिकोण को राजनीतिक भूगोल का अध्ययन (Study of Political Geography) कहा जाता था और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भूगोल की भूमिका के अध्ययन पर बल दिया जाता था।

बहुत प्राचीन समय में अनेक विद्वानों जैसे कि प्लैटो (Plato), हीरोडैटस (Herodotus) हीकेसीयस (Hecataeus) आदि ने राजनीति के अध्ययन के लिए भूगोल के अध्ययन को महत्त्व दिया और भौगोलिक आधारों पर किए जाने वाले अध्ययनों को राजनीतिक भूगोल (Political Geography) कहा। सताहवीं शताब्दी में विलियम पैटी ने ज़ोरदार ढंग से यह मत दिया कि राजनीति में भूगोल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए राजनीतिक भूगोल का अध्ययन करना बहुत आवश्यकता था। अठारवीं शताब्दी में चिंतक ईमैनुयल कांट (Immanual Kant) ने भी राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के महत्त्व को स्वीकार किया। जर्मनी में कांट के शिष्यों, जैसे कि फ्रैडरिक (Fredrich), हैनरिश (Heinrich), वान ट्रिशटे (Von Trietschte), कार्ल रिटर (Karl Ritter), फ्रैडिरिक रैजल (Freidrich Ratzal) ने भी राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के महत्त्व को स्वीकार किया, राजनीति और भूगोल के प्रभाव की व्याख्या की और राजनीतिक भूगोल के विषय का विकास किया। विशेषतया, फ्रैडरिक रैज़ल (Fredrich Ratzal) ने अपनी रचना 'Politische Geographie' में राजनीतिक भूगोल के विषय का काफी विकास किया। उस ने राज्य के लोगों और भूमि के संघ के रूप में परिभाषित किया और व्यक्ति और धरती में निकटतम सम्बन्धों की व्याख्या की। उस ने लिखा, "प्रत्येक राज्य मानवता और भू–क्षेत्र के एक भाग से बनता है।" (Every State is made

up of a portion of territory and humanity.") उस ने मिट्टी और भौतिक भौगोलिक तत्त्वों का मूल्य राज्य के साथ सम्बन्ध के आधार पर परिभाषित किया। उस ने यह भी मत दिया कि मिट्टी लोगों के भाग्य पर शासन करती है। उस ने पुलाड़ को एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति के रूप में परिभाषित किया। समूचित रूप में, उस ने यह मत दिया कि भौगोलिक तत्त्व सदैव राजनीति को निर्धारित करते हैं। समाज-शास्त्र में भी भौगोलिक निर्धारण का सिद्धान्त (Theory of Geographic Determinism) काफी लोकप्रिय रूप में विकसित हुआ और इस ने यह मत दिया कि भूगोल ही सभी सामाजिक सम्बन्धों को निर्धारित करता है।

परन्तु राजनीतिक भूगोल का वास्तविक विकास बीसवीं शताब्दी के प्रथम भाग, विशेष तौर पर दूसरे विश्व युद्ध के समय में बहुत व्यापक रूप में हुआ और राजनीतिक भूगोल को भू-राजनीति (Geo-Politics) का नाम मिला।

वास्तव में बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में जर्मनी में राजनीतिक भूगोल को राज्य के एक राजनीतिक उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। जर्मन राजनीति भूगोलवादियों ने राज्य की शक्ति और नीतियों पर भौगोलिक तत्त्वों के प्रभाव को बहुत महत्त्व दिया। राजनीतिक भूगोल के अध्ययन को बहुत महत्त्व दिया गया। परन्तु जब प्रथम विश्व-युद्ध में जर्मनी की बड़ी हार हो गई तो जर्मन भूगोलवादियों ने राजनीतिक भूगोल के विषय को एक नया नाम भू-राजनीति (Geo-Politics) देकर इसको अधिक लोकप्रियता देने का प्रयास किया। उन्होंने भू-राजनीति को एक नए विषेय के रूप में प्रचारित किया।

1922 में कार्ल होशैफर (Karl Haushofer) भू-राजनीति के प्रबल समर्थक के रूप में सामने आए और उन्होंने म्यूनिख विश्व-विद्यालय से भू-राजनीति पर एक पत्रिका प्रकाशित करनी आरम्भ कर दी जिसमें भू-राजनीति के विभिन्न विषयों पर लेख और चर्चाएं प्रकाशित की गईं। भू-राजनीति की संस्था (Institute of Geo-Politics) की स्थापना की गई ताकि भू-राजनीति पर शोध को उत्साहित किया जाए। इस समय तुलनात्मक भूगोल (Comparative Geography) की उत्पत्ति हुई और युद्ध भूगोल (War Geography) के अध्ययन को काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। जर्मनी में भू-राजनीति के विषय को समुचित रूप में एक नई लोकप्रियता प्राप्त हो गई।

जर्मनी में भू-राजनीति को राज्य की नीति-निर्माण प्रक्रिया के एक महत्त्वपूर्ण आधार के रूप में प्रस्तुत किया गया। भू-राजनीति वैज्ञानिक हौशोफर जर्मन नाज़ी पार्टी के साथ दृढ़ रूप से जुड़ गया और जब 1933 में हिटलर शक्तिशाली नेता के रूप में उभर कर सामने आया तो होशैफर उसका प्रभावशाली नीति-सलाहकार बन गया। इस स्थिति में भौगोलिक धारणा के आधार पर राजनीतिक शक्ति को परिभाषित भी किया गया और राजनीतिक शक्ति को दृढ़ बनाने के लिए भौगोलिक तत्त्वों के प्रयोग के सिद्धान्त को भी प्रस्तुत किया गया। भूगोल के आधार पर राष्ट्रीय शक्ति के प्रयोग के सिद्धान्त को अपनाया गया।

इसी समय के आस-पास या फिर यूं कहें कि जर्मनी में विकसित हुई भू-राजनीति के प्रभावाधीन कुछ अन्य देशों में भी भू-राजनीतिक अध्ययन किए गए। **ब्रिटेन में हैलफर्ड (Halford Mackinder) और संयुक्त राज्य अमरीका में स्पाईकमैन (Spykman) और एस. बी कोहन (S. B. Kohen) ने भू-राजनीतिक अध्ययनों के महत्त्व को स्वीकार किया।**

संयुक्त राज्य अमरीका ने राष्ट्रीय शक्ति में समुद्री शक्ति (Naval Power) को महत्त्व दिया और भू-राजनीतिक वैज्ञानिकों के इस मत को स्वीकार किया कि विश्व में वही देश एक महाशक्ति का दर्जा प्राप्त कर सकता था जिसके पास विशाल समुद्री शक्ति हो, जो विश्व के समुद्रों पर शासन करे और विश्व सागरीय व्यापार व्यवस्था (Global Sea Trade & System) को निर्देशित और संचालित करें और अपने पक्ष में प्रयोग करने का सार्म्थ्य रखे।

इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भू-राजनीति दृष्टिकोण को बहुत महत्त्व प्राप्त हो गया। भौगोलिक तत्त्वों के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करना एक बहुत प्रचलित अभ्यास बन गया। होशैफर (Haushoper), मकिंडर (Maekinder), सपाईकमैन (Spykeman), अलफ्रैड माहन (Alfred Mahan) और एस.बी. कोहन (S. B. Kohen) के नाम भू-राजनीति के अध्ययन में बहुत प्रसिद्ध हो गए। भू-राजनीति के अध्ययन को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में मान्यता मिली।